आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 7 अंक : 03 नवम्बर-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

रोजगारपरक पशुपालन एक उत्तम व्यवसाय है

प्रिय किसान और पशुपालक भाइयो व बहनो !

राम-राम सा ।

प्राचीन समय में सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत में दूध और दही की नदियां बहने का उल्लेख मिलता है। इस देश की विभिन्न भौगोलिक पारिस्थितिकी और जैव विविधता इसकी प्रमुख विशेषता है। समाज में प्रकृति की अर्चना, पशुपालन और जीवों के प्रति दया-भाव हमारी सांस्कृतिक परंपराओं में शामिल रहा है। बदलते सामाजिक परिवेश में इनके प्रति बेरूखी के नकारात्मक परिणाम ही आयेंगे। पशुपालन हमारे यहां सामाजिक और आर्थिक समृद्धि का संवाहक रहा है। विज्ञान और नवीन तकनीक के युग में पशुपालन व्यवसाय के तौर-तरीकों में बदलाव करके इसको अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है। गौ पालन हमारे यहां गांव और घर-घर के स्वावलम्बन का एक सशक्त माध्यम रहा है। राजस्थान में अकाल, अल्पवृष्टि या अन्य प्राकृतिक आपदाओं से खेती-बाड़ी में होने वाले नुकसान के समय पशुपालन ने विशेषतौर पर गौपालन ने हमेशा किसान और पशुपालकों को सहारा दिया है। राजस्थान देशी गौवंश में एक समृद्ध प्रदेश है जहां श्रेष्ठ किस्म का देशी गौवंश उपलब्ध है। राज्य में कुल 1.33 करोड गौवंश में 1.15 करोड़ देशी गौवंश मौजूद है। राज्य की थारपारकर, कांकरेज, साहीवाल और राठी गौ नस्लों की अद्‌भुत उत्पादन क्षमता के कारण देश-विदेश में इनकी मांग बढ़ रही है। देशी गौ पालन कम खर्च और मेहनत से आय का एक सरल स्त्रोत है। डेयरी उद्योग, गोबर और गौमूत्र के उपयोगी उत्पाद बनाकर इनके विपणन की अच्छी संभावनाएं मौजूद हैं। हमें अधिक उत्पादन के लिए पोषण और प्रजनन के वैज्ञानिक उपाय अपनाने होंगे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर राज्य की 6 श्रेष्ठ देशी गौ नस्लों के विकास, नस्ल सुधार और उत्पादन क्षमता बढ़ाने के कार्य किए जा रहे हैं। इन कन्द्रों द्वारा नस्ल सुधार के लिए अब तक श्रेष्ठ नस्ल के लगभग 2000 नंदी गौशालाओं को उपलब्ध करवाए गए हैं। पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीछवाल (बीकानेर) के पशु आहार संयंत्र में पौष्टिक पशु आहार की चुनौतियों से निपटने और स्थानीय वनस्पति के उपयोग से किफायती आहार बनाने का कार्य किया जा रहा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर में राज्य की पहली उन्नत तकनीक की दुग्ध जांच प्रयोगशाला में जैव तकनीकी पदार्थ पर अनुसंधान किया जा रहा है। गौपालन से जुड़े विभिन्न प्रकार के उत्पाद और सभी प्रकार के उप-उत्पादों की मांग और उपयोगिता कभी कम नहीं होगी। इस व्यवसाय के लिए विपणन बाजार उपलब्ध है तथा यह तात्कालिक लाभ देने वाला है। अनेक युवाओं, किसानों और पशुपालकों ने इसको व्यवसाय के रूप में अपना कर इसे अपनी रोजी-रोटी का जरिया बनाया है। किसान, पशुपालकों और युवाओं को इस व्यवसाय की क्षमताओं को पहचान कर आगे आने की जरूरत है। वेटरनरी विश्वविद्यालय इसके लिए तकनीकी प्रशिक्षण और मार्गदर्शन देने के लिए सदैव तैयार है।

जय हिन्द !

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारिया, राज्यमंत्री श्री भजनलाल जाटव, विधायक श्री रफीक खान एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा 21 अक्टूबर को पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर में ई-बुलेटिन का विमोचन करते हुए

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

-महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर का अवलोकन

स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान की उच्च कोटि की सेवाओं और सुविधाओं से पशुचिकित्सा सेवाएं हुई सुदृढ़ : कृषि एवं पशुपालन मंत्री कटारिया

कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारिया, राज्यमंत्री श्री भजनलाल जाटव, कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा, विधायक श्री रफीक खान एवं राज्य पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ. शैलेश शर्मा ने 21 अक्टूबर को स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर का अवलोकन कर वहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। श्री कटारियां ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय राज्य का एक मात्र और देश का ख्यातनाम संस्थान है। राजुवास के शैक्षणिक, अनुसंधान, पशु स्वास्थ्य और उपचार सेवाओं से राज्य और देश में कुशल मानव संसाधन और तकनीकी सेवाएं सुलभ हो रही है। उन्होंने संस्थान में उपलब्ध सुविधाओं तथा प्रगति कार्यों की सराहना की तथा इसके विकास में हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। अतिथियों ने संस्थान के मुख्य भवन में स्थित विभिन्न विभागों, पशुधन फार्म संकुल, वेटरनरी क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स, पुस्तकालय, व्याख्यान कक्षों का अवलोकन किया। कुलपति प्रो. शर्मा ने विश्वविद्यालय तथा संस्थान की स्थापना, क्रियाकलापों, प्रगति एवं उपलब्धियों से अवगत कराया। इस अवसर पर पशुपालन कृषि मंत्री श्री कटारिया और अतिथियों ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के ई– बुलेटिन का विमोचन किया। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि ई–बुलेटिन के माध्यम से पशुचिकित्सा शिक्षा फैकल्टी और विद्यार्थियों को उपयोगी जानकारी सोशल मीडिया के मार्फत सुलभ हो सकेगी। संस्थान की कार्यवाहक अधिष्ठाता प्रो. (डॉ.) संजीता शर्मा ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय कामधेनु आयोग अध्यक्ष डॉ. कथीरिया द्वारा देशी गोवंश संवर्द्धन कार्यों का अवलोकन

राष्ट्रीय कामधेनु आयोग के अध्यक्ष डॉ. वल्लभ भाई कथीरिया ने वेटरनरी विश्वविद्यालय में 13 अक्टूबर को डीन–डायरेक्टर, विभागाध्यक्षों, प्रमुख अन्वेषकों और शोधार्थी विद्यार्थियों से मुलाकात करके देशी गोवंश के संरक्षण और संवर्द्धन कार्यों की जानकारी ली। डॉ. कथीरिया ने राजुवास के राठी गोवंश केन्द्र पर उन्नयन संवर्द्धन कार्यों का अवलोकन किया। राजुवास के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने राज्य में देशी गोवंश के संरक्षण और विकास कार्यों से अवगत करवाया। कुलपति सचिवालय में आयोजित बैठक में डॉ. कथीरिया ने कहा कि भारतीय गोवंश वर्तमान सामाजिक, विकास, मानव स्वास्थ्य के हित और पर्यावरण को ठीक बनाए रखने का एक सशक्त विकल्प है। अब समय आ गया है कि हम देशहित में अपने गोवंश के गौरव की पुर्नःस्थापना के कार्य में जुट जाएं। उन्होंने कहा कि विदेशों में श्रेष्ठ भारतीय गोवंश को लेकर उन्नत अनुसंधान हो रहा है लेकिन हम अपनी क्षमताओं के प्रति जागरूक नहीं हैं। डॉ. कथीरिया ने राज्य में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा देशी गोवंश के संरक्षण और संवर्द्धन कार्यों की सराहना करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय राज्य के पशुपालकों और गौशालाओं को उन्नत जर्मप्लाज्म उपलब्ध करवा रहा है। कुलपति प्रो. शर्मा ने सभी नस्लों पर किए गए अनुसंधान उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ. कथीरिया ने विश्वविद्यालय की हिन्दी मासिक पत्रिका "पशुपालन नये आयाम" के नवीन अंक का विमोचन किया।

पशुपालन कल्याण योजनाओं पर राजुवास और नाबार्ड मिलकर करेंगे कार्य, पशुपालकों की आय बढ़ाने के होंगे प्रयासः कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

पशुपालकों की आय को दोगुना करने के लिए राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक और वेटरनरी विश्वविद्यालय मिलकर पशुपालक कल्याण योजनाओं के लिए कार्य करेंगे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में 3 अक्टूबर को आयोजित बैठक में नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक श्री सुरेश चन्द ने विश्वविद्यालय की पशुपालक कल्याण की अनुसंधान परियोजनाओं और कार्यों की जानकारी ली। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने जैविक पशुपालन और पशुधन उत्पादन के लिए कार्य शुरू किया है। पशुपालकों को जैविक पशुपालन के लिए प्रेरित करने से उनकी आय में आशातीत वृद्धि हो सकती है। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के महाप्रबंधक श्री सुरेश चन्द ने कहा कि राजुवास राज्य का एक प्रतिष्ठित और अग्रणी संस्थान है। पशुपालकों के कल्याण की योजनाओं और कार्यक्रमों के लिए नाबार्ड वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाता है। राज्य

के पशुपालकों के उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिले इसके लिए कार्य करने की जरूरत है। बैठक में नाबार्ड के क्षेत्रीय प्रबंधक रमेश ताम्बिया सहित विश्वविद्यालय के डीन–डॉयरेक्टर, विभागाध्यक्ष और अनुसंधान परियोजनाओं के प्रमुख अन्वेषक शामिल हुए।

संभाग के गौशाला व्यवस्थापकों का प्रशिक्षण
उन्नत गौशालाओं के लिए वैज्ञानिक तौर तरीकों को अपनाना जरूरी : कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

राज्य में गौशालाओं को उन्नत और स्वावलम्बी बनाने के लिए वैज्ञानिक तौर–तरीकों को अपनाना जरूरी है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने ये उद्‌गार राज्य के गोपालन निदेशालय और वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वावधान में संभाग के गौशाला व्यवस्थापकों के तीन दिवसीय प्रशिक्षण के समापन अवसर पर व्यक्त किए। प्रशिक्षण में श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू और बीकानेर जिलों के 35 गौशाला संचालकों/व्यवस्थापकों ने भाग लिया। कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि निराश्रित गौवंश सेवा के पावन कार्य के साथ अच्छी नस्ल के समृद्ध गौवंश के वैज्ञानिक विकास के प्रति भी गौसेवकों को सचेष्ट रहना होगा। गौशालाओं को स्वावलम्बी बनाने के लिए पशुधन उत्पादन बढ़ाने के लिए परिसर में पौष्टिक आहार, अजोला, चारा उत्पादन कार्य, वर्मी कंपोस्ट, सौर ऊर्जा और गोबर गैस संयंत्रों की स्थापना कर लेनी चाहिए। गोपालन विभाग के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय हर तरह के तकनीकी और विशेषज्ञ सेवाएं सुलभ करवा रहा है। उन्होंने कहा कि उन्नत गोपालन एवं विकास कार्यों के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय से कभी भी मार्गदर्शन लिया जा सकता है। गोपालन निदेशालय के अतिरिक्त निदेशक डॉ. लाल सिंह ने कहा कि उन्नत तकनीक और गोपालन तौर–तरीकों के लिए यह प्रशिक्षण अत्यंत उपयोगी है। उन्नत नस्ल के पशुओं से दुग्ध उत्पादन बढ़ाने गोबर और गोमूत्र की उपयोगिता के कार्य लागू करके गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मदद मिलेगी। राजुवास के कार्यवाहक प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि 35 गौशालाओं के व्यवस्थापकों को तीन दिन तक गौशालाओं में उन्नत गोपालन और आय बढ़ाने के तरीकों की वैज्ञानिक जानकारी दी गई। पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर में राज्य के श्रेष्ठ गोवंश विकास कार्यों और भीनासर की आदर्श मुरलीमनोहर गौशाला में पशुधन उत्पादों के मूल्य संवर्द्धन कार्यों का अवलोकन करवाया गया।

बी.एस.एफ. के उष्ट्र दस्ते के 21 जवानों का प्रशिक्षण

सीमा सुरक्षा बल के उष्ट्र दस्ते के 21 जवानों का दो दिवसीय पशु आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण 18 अक्टूबर को वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र में संपन्न हो गया। इस प्रशिक्षण में सीमा सुरक्षा बल मुख्यालय, जोधपुर के एक डिप्टी कमांडेंट और 20 उष्ट्र चालक जवान शामिल हुए। राजुवास के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि इन जवानों को उष्ट्र चालक और आपदा की विभिन्न स्थितियों में प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों की

व्यावहारिक जानकारी दी गई। यह उष्ट्र दस्ते के लिए अत्यंत लाभकारी होगा। उष्ट्र विशेषज्ञ डॉ. टी.के. गहलोत ने उष्ट्र पालक के रख रखाव संबंधित समस्याओं के निस्तारण और प्रबंधन पर सचित्र व्याख्यान प्रस्तुत किया। सर्जरी के सहायक प्राध्यापक डॉ. एस.के. झीरवाल ने आपदा के समय उष्ट्रों में नेत्र रोगों का निदान और उपचार विषय पर जानकारी दी।

पशुधन कल्याण के उपयोगी सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू किये जायेंगे : कुलपति प्रो.शर्मा

राज्य के समग्र पशुधन कल्याण और उपयोगी अनुसंधान कार्यों की समीक्षा बैठक 19 अक्टूबर को वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। राज्य मद में स्थापित इन 10 अनुसंधान केन्द्रों में पशुचिकित्सा में पारंपरिक उपचार, अंतरिक्ष आधारित तकनीक, जैव विविधता, जैविक पशु उत्पादन, आपदा प्रबंधन, चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण, वन्य जीव प्रबंधन, टीकाकरण व जैविक उत्पाद और पशुविज्ञान में अभियांत्रिकी–प्रौद्योगिकी विकास के लिए अनुसंधान कार्य किया जा रहा है। उन्होंने परियोजना के प्रमुख अन्वेषकों को निर्देशित किया कि वे अल्प अवधि के सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम प्रारंभ करके उपयोगी कार्यों का व्यापक प्रसार करें। कुलपति प्रो. शर्मा ने सभी केन्द्रों की प्रगति और कार्यों की समीक्षा की। बैठक में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक प्रो. आर.के. सिंह सहित दस अनुसंधान केन्द्रों के प्रमुख अन्वेषक शामिल हुए।

150वीं गांधी जयंती पर स्वच्छता अभियान, रैली और वाद–विवाद प्रतियोगिता सम्पन्न

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती वर्ष में 2 अक्टूबर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में एन.सी.सी. कैडेट्स रैली, वाद–विवाद प्रतियोगिता और विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर, विभिन्न विभागों, पशुधन अनुसंधान केन्द्रों और पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों एवं संघटक महाविद्यालयों पर बड़े पैमाने पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने अपने संदेश में सभी का आह्वान किया है कि जीवन में स्वच्छता को अपनाते हुए इसको अपनी आदत बनाने से ही अभियान की सार्थकता होगी। उन्होंने बताया कि राज्य में विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालयों और केन्द्रों पर स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव सहित विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर, शैक्षणिक और अशैक्षणेतर कर्मचारियों, छात्र–छात्राओं ने श्रमदान किया। महाविद्यालय सेवा योजना इकाई के स्वंयसेवकों एवं 1 राज. आर.एण्ड वी. एन.सी.सी. स्क्वाड्रन के कैडेट्स ने भी श्रमदान किया। पशुचिकित्सा महाविद्यालय में आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता में **"वर्तमान समय के परिपेक्ष में गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता"** विषय पर अखिल तिवारी प्रथम, मोहित खत्री द्वितीय और सतवीर मोखरिया तृतीय स्थान पर विजेता रहे।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 11, 15 एवं 18 अक्टूबर को गांव गोठया बड़ी, मेहरी एवं घण्टेल गांवों में तथा दिनांक 19 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 93 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में 217 पशुपालक लाभान्वित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 4, 5, 10, 14, 16 एवं 19 अक्टूबर को गांव अमरपुरा, सांवतसर, संगर, 3ई छोटी, बींझवाला एवं केरा चक गांवो में तथा दिनांक 18 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 217 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 3, 5 एवं 10 अक्टूबर को गांव मीरगढ़, पोसिन्द्रा एवं चिनिया बांध गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 76 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 15 एवं 16 अक्टूबर को गांव जोचीना एवं काठोती गांवों में तथा 12 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 73 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 158 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 9, 10, 15, 16 एवं 18 अक्टूबर को गांव आसनकुण्डिया, रेवत, सूपा, शिवनाथपुरा एवं लसाड़िया गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 158 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 4, 9 एवं 12 अक्टूबर को गांव आहेटा फलां, डाबोर फलां एवं रेंगा फलां गांवों में तथा दिनांक 1 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 111 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 4, 12 एवं 16 अक्टूबर को गांव नगला धरसोनी, बेरी एवं सहराई गांवो में तथा दिनांक 10 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 80 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 4, 5, 7 एवं 14 अक्टूबर को गांव मून्डिया, पलेई, गोपालपुरा एवं देवली भांची गांवों में तथा दिनांक 3 एवं 16 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 128 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 7, 9, 10, 11 एवं 14 अक्टूबर को गांव शैरूणा, ढाणी भोपालाराम, नापासर साहनीवाला एवं रोजा गांवों में तथा दिनांक 16 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 168 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा 120 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 14 एवं 17 अक्टूबर को गांव अमरपुरा, मोरपा एवं मूण्डला गांवों में तथा दिनांक 3 एवं 15 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 120 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 10 एवं 11 अक्टूबर को गांव गणपत खेड़ा एवं केशरपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 51 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 10 एवं 15 अक्टूबर को गांव दुबेपुरा, गढ़ी चटोला एवं बीलोनी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी जोधपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 14, 16, 17 एवं 19 अक्टूबर को गांव जेलू, रामगढ़, डिगाडी एवं मलूंगा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 109 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी झुंझुनूं द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 14 एवं 18 अक्टूबर को गांव कुमावास पूनिया का एवं भीमसर गांवों में तथा दिनांक 16 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 84 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 21 अक्टूबर को गांव लाखनवास में एके दिवसीय तथा 15 अक्टूबर को एक दिवसीय तथा 17–19 अक्टूबर को तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर में किया गया। इन शिविरों में 100 किसानों ने भाग लिया।

सर्दियों में पशु-पक्षी व नवजात की देखभाल कैसे करें ?

इस वर्ष लगभग सम्पूर्ण राज्य व आसपास के क्षेत्रों में अच्छी वर्षा होने के कारण राज्य में जल्दी सर्दी आने की संभावना है। अतः पशुपालकों को सर्दी से बचाव हेतु समय पूर्व ही सावधानी रखनी आवश्यक है जिससे पशुपालकों को किसी प्रकार की हानि नहीं हो। नवम्बर माह में विशेषतः रात के समय तापमान में काफी गिरावट आती है जिसके कारण पशु तनावग्रस्त भी होता है और यदि पशु–पक्षी की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम है तो वह विभिन्न प्रकार के संक्रमणों से प्रभावित हो सकता है। सर्दियों में पशु विशेषतौर पर नवजात, मुख्य रूप से न्यूमोनिया से प्रभावित होते हैं तथा पक्षी फेफड़ों से संबन्धित संक्रमण तथा कोल्ड स्ट्रैस (शरीर का तापमान कम होना) से प्रभावित होते हैं। न्यूमोनिया व अन्य संक्रमण को यदि समय रहते नियन्त्रित नहीं किया जाता है तो पशु–पक्षी मौत का शिकार हो जाते हैं। सर्दी से प्रभावित दुधारू पशुओं में दुग्ध उत्पादन में तथा मुर्गियों में अण्डा उत्पादन में भारी कमी देखने को मिलती है जिससे पशुपालक को आर्थिक हानि होती है अतः पशुपालकों को सर्दियों में पशु–पक्षियों का ध्यान रखने के लिए ये उपाय अपनाने चाहिए–

1. रात के समय पशुओं को छायादार स्थान अथवा पशु घर में रखें।
2. नवजात को पर्याप्त मात्रा में मां का दूध पीने दें।
3. पशुओं को बुखार, खांसी होने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
4. पशुओं के आसपास सफाई का ध्यान रखें लेकिन अनावश्यक रूप से पशु को सर्दी में नहलाए नहीं।
5. मुर्गियों को सर्दी व ठण्डी हवा से बचाने के लिए खिड़की–दरवाजों पर पल्ली लगायें, लेकिन यह ध्यान रहे कि स्वच्छ हवा का आदान–प्रदान या बहाव ना रूके।
6. चूजों का इस मौसम में विशेष ध्यान रखें, यदि रात के समय ज्यादा सर्दी हो तो चूजों के लिए हीटर अथवा ज्यादा वाट के बल्ब का इस्तेमाल किया जा सकता है।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

ग्याभिन पशुओं की देखभाल एवं सावधानियां

प्रसव पूर्व देखभाल

1. ग्याभिन पशुओं को समुचित आहार देना चाहिए एवं साफ जगह पर रखना चाहिए।
2. 2–3 माह के ग्याभिन पशुओं को कृमिनाशक दवा नहीं देनी चाहिए, ऐसा करने से बच्चे में अनुवांशिक परेशानी होने की आंशका रहती है।
3. ग्याभिन भेड़ों को प्रसव से 4–6 सप्ताह पूर्व क्लास्ट्रीडियम बीमारियों से बचाव हेतु टीके लगाने चाहिए तथा टेटनस का टीका भी लगाना चाहिए।
4. ग्याभिन गायों एवं भैंसों को अन्य पशुओं से अलग रखना चाहिए।
5. ग्याभिन पशुओं को गर्भ की दूसरी तिमाही के बाद ज्यादा तेज भगाना नहीं चाहिए एवं आपस में लड़ने नहीं देना चाहिए।
6. ग्याभिन बछड़ियों के 6–7 महीने के गर्भ के बाद उन्हें अन्य दुधारू पशुओं के साथ बांधना चाहिए तथा उनके कमर, ऊस तथा शरीर पर हाथ फैरना चाहिए। ग्याभिन बछड़ियों की दोनों पिछली टांगों पर अलग–अलग एक रस्सी बांध देनी चाहिए, ताकि ब्याने के बाद उसे दुहते समय पिछली टांगों पर रस्सी बंधवाने की आदत हो जाए।
7. ग्याभिन गायों, भैंसों का गर्भ के अन्तिम महीने में खान–पान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। हरा चारा आवश्यक रूप से देना चाहिए। यदि हरा चारा उपलब्ध ना हो तो गर्भ के 5वें एवं 7वें माह में विटामिन–ए के टीके लगाने चाहिए जिससे बछड़े अंधे पैदा ना हों।
8. गर्भ काल की पहली और दूसरी तिमाही के दौरान पशुओं को कम ऊर्जा व अधिक रेशे वाला आहार देना चाहिए लेकिन गर्भ के अन्तिम महीने में धीरे–धीरे ऊर्जा युक्त आहार देना चाहिए। गर्भ के अन्तिम महीने में पशुओं को एक किलो दाना मिश्रण देना शुरू कर देना चाहिए तथा ब्याने से 10 दिन पूर्व से 500 ग्राम से एक किलो गेंहू का चापड़ दे सकते हैं।
9. गाय, भैंस जैसे जुगाली करने वाले पशुओं को अत्यधिक घी अथवा तेल नही देना चाहिए। गर्भकाल के अन्तिम महीने में कैल्शियम नहीं देना चाहिए, इससे ब्याने के पश्चात होने वाली बीमारी मिल्क फीवर से बचा जा सकता है, साथ ही पशुओं को ऐसा चारा कम मात्रा में खिलाना चाहिए जिसके उगाने में अत्यधिक पोटेशियम का फर्टिलाइजर डाला गया हो।
10. ग्याभिन घोड़ियों को सातवें और नौवें महीने में तथा ब्याने के तुरंत पश्चात टेटनस के टीके लगाने चाहिए तथा कई अन्य बीमारियों से बचाव के टीके भी लगवाने चाहिए।
11. आम तौर पर ब्याने वाली मादा श्वानों के टीके नहीं लगाए जाते लेकिन ब्याने से 2–3 सप्ताह पूर्व पार्वो वायरस बीमारी से बचाव के टीके लगाए जा सकते हैं।

प्रो. गोविन्द नारायण पुरोहित, (मो.9414325045)
विभागाध्यक्ष, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग,
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

चारे का समुचित उपयोग के लिए कुटट्री बना कर खिलाएं

पशुओं की उत्पादन क्षमता उनको दिये जाने वाले आहार पर निर्भर करती है। पशुओं को संतुलित आहार दिया जाये तो उनकी उत्पादन क्षमता को निश्चित ही बढ़ाया जा सकता है। हरे चारे के उपयोग से पशुओं को आवश्यकतानुसार विटामिन–ए एवं अन्य विटामिन्स तथा मिनरल्स मिलते हैं इसलिए पशुपालकों को अपने पशुधन से उचित उत्पादन हेतु संतुलित आहार खिलाने का प्रबंध अवश्य करना चाहिए। पशुओं से अधिकतम उत्पादन के लिए उन्हें पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक चारे की आवश्यकता होती है। इस चारे को पशुपालक या तो स्वंय उगाता है या फिर कहीं ओर से खरीद कर पशुओं को खिलाता है। चारे की फसल उगाने का खास समय होता है, जो अलग–अलग चारे के लिए अलग होता है। चारे को अधिकांशतः हरी अवस्था में पशुओं को खिलाया जाता है तथा अतिरिक्त मात्रा को सुखाकर भविष्य में प्रयोग करने के लिए भण्डारण कर लिया जाता है जिससे चारे की कमी के समय उसका उपयोग पशुओं को खिलाने के लिए किया जा सके।

पशु आहार का मुख्य भाग फसल अवशेषों जैसे गेंहू तथा धान के फसली अवशेष दलहनी फसलों के अवशेष एवं विभिन्न घासों से प्राप्त होता है। कई बार देखा गया है कि पशुपालक इन फसली अवशेषों एवं घासों को पुआल के रूप में अथवा इनकी कुट्टी बनाकर पशुओं को खिलाता है। इन फसली अवशेषों, हरे चारे एवं घासों को सीधा न खिलाकर इनकी कुट्टी बनाकर खिलाना चाहिए जिसके फायदे इस प्रकार हैं :–

1. सीधा चारे को पुली के रूप में डालने पर पशु केवल पत्तिया एवं पौधे के नरम/मुलायम भाग को ही खा पाता है, कुट्टी बनाने से चारे का एक समान मिश्रण बन जाता है जिसे पशु चारे को बिना खराब/व्यर्थ किये खा लेता है।
2. कुट्टी बनाने के पश्चात कम स्वादिष्ट चारे को अधिक स्वादिष्ट चारे के साथ मिलाकर उपयोग में लिया जा सकता है।
3. चारे की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए यूरिया से उपचारित किया जाता है। यूरिया उपचार से पहले चारे की कुट्टी बनाना आवश्यक है।
4. सूखे चारे की कुट्टी बनाकर हरे चारे के साथ मिलाकर खिलाने से हरे चारे से होने वाली आफरे की समस्या खत्म हो जाती है।
5. कुट्टी किया हुआ चारा साबुत चारे की तुलना में अधिक पाचक होता है क्योंकि चारे के छोटे टुकड़ों पर पशु के पेट के जीवाणु अच्छे से क्रिया करके पचाने में अधिक सक्षम होते हैं।
6. हरे चारे को साईलेज के रूप में भंडारित करने से पूर्व उसकी कुट्टी बनाना आवश्यक है।

7. कुट्टी किये हुए चारे को भंडारित करना आसान है।
8. संघनित पशु आहार ब्लॉक बनाने से पूर्व भी चारे की कुट्टी करना आवश्यक है।
9. साबुत चारे को चबाने के लिए पशु को अधिक समय लगता है एवं उसमें ऊर्जा भी अधिक खर्च होती है।
10. चारे को छोटे टुकड़ों में काटने से उसके सतह का क्षेत्रफल बढ़ जाता है जिससे पशुओं के पेट में उपस्थित सूक्ष्म जीव चारे को आसानी से पचा सकते हैं।

चारे की कुट्टी बनाने की मुख्यतया दो विधियां उपयोग में ली जाती हैं:

1. हस्त चलित कुट्टी मशीन से चारे की कुट्टी बनाना– हस्त कुट्टी मशीन कम मात्रा में चारे की कुट्टी बनाने के लिए उपयुक्त है। यह सामान्यतया प्रतिदिन काटे जाने वाले हरे चारे की कुट्टी बनाने के लिए उपयोग में लायी जाती है। यह संचालित करने में आसान है तथा तुलनात्मक रूप से सस्ती होने के कारण आर्थिक रूप से कमजोर पशुपालक भी आसानी से खरीद सकते हैं।
2. ईंजन द्वारा संचालित कुट्टी मशीन – यह अधिक मात्रा में सूखे व हरे चारे की कुट्टी बनाने के लिए उपयुक्त है। यह ईंजन अथवा विद्युत (मोटर) द्वारा संचालित होती है। इससे काफी कम समय में अधिक मात्रा में चारे की कुट्टी बनायी जा सकती है किन्तु यह तुलनात्मक रूप से मंहगी होने के कारण प्रत्येक पशुपालक इसे वहन नहीं कर सकता।

डॉ. राजेश नेहरा, (मो.9461504858)
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–नवम्बर, 2019

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, झुंझुनू, धौलपुर, सवाई–माधोपुर, अलवर, जयपुर, बांसवाड़ा, अजमेर, बीकानेर, चूरू
पी.पी.आर. (PPR)	बकरी, भेड़	हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरू, झुंझुनू, सीकर, सवाई–माधोपुर, सिरोही, पाली, जयपुर, श्रीगंगानगर, जोधपुर
चेचक (Pox)	बकरी, भेड़	जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, अलवर, नागौर
गलघोंटू (Haemorrhagic septicemia)	भैंस, गाय	जयपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा, टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, उदयपुर, श्रीगंगानगर, अलवर, धौलपुर, झुंझुनू, हनुमानगढ़, भरतपुर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस (Pneumonic Pasteurelosis)	गाय, भैंस,	सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, बांसवाड़ा, भरतपुर
ठप्पा रोग (Black Quarter)	भैंस, गाय	जैसलमेर, जयपुर, बीकानेर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़
फड़किया (Enterotoxaemia)	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, धौलपुर, भीलवाड़ा, अलवर, भरतपुर
Enzootic Abortion in Ewes/ Chalmydial Abortion	भेड़	बीकानेर, नागौर
सर्रा (तिबरसा) (Trypanosomiasis)	ऊंट, भैंस	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, झालावाड, पाली
रक्त प्रोटोजोआ थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस (Theileriosis and Babesiosis)	भैंस, गाय	बांसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, जयपुर, पाली, चूरू, अलवर
अन्तः परजीवी (पर्ण–कृमि, गोल–कृमि, फीता–कृमि)	बकरी, भेड़, ऊंट, भैंस, गाय	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बांसवाड़ा, सवाई–माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, सीकर, बीकानेर, उदयपुर, चूरू,

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

अपनी रुचि को दें नई पहचान

हमें हर सुबह खुद को पिछले दिन से बेहतर बनाने का मौका देती है लेकिन बहुत कम लोग इसका लाभ ले पाते हैं। इसी सोच को लेकर अपने कार्य की शुरूआत की नोहर की संतोष देवी ने। संतोष देवी एक साधारण गृहणी है, जिन्होंने वर्ष 2008 से सिलाई का कार्य शुरू किया तथा आज भी कर रही है। सिलाई से मिली हुई आमदनी से वे पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं थी लेकिन अनुभव एवं साधनों की कमी के फलस्वरूप वे समझ नहीं पा रही थी कि वे ऐसा क्या कार्य करें जो कि उन्हें उचित और अतिरिक्त लाभ दिला सके। उन्हें एक प्रशिक्षण के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के बारे में पता चला। संतोष देवी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर से जुड़कर आचार चॉकलेट, कैन्डी, मुरब्बा, जैम इत्यादि को बनाने एवं संरक्षित किए जाने का प्रशिक्षण लिया। अपनी रूचि को देखते हुए उन्होंने विभिन्न तरह के आचार, मुरब्बे बनाने सम्बधी कार्य करने का निश्चय किया। वैसे तो उन्हें आचार बनाने सम्बधी जानकारी थी परन्तु तकनीकी रूप से आचार मुरब्बे बनाने तथा उसको व्यवसाय का रूप प्रदान करने के अनुभव की कमी के रहते वे इतनी आत्मविश्वासी नहीं थी। कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क के दौरान उन्होंने आचार निर्माण की सही तकनीक को समझा तथा आत्मविश्वास के साथ उसे अपनाया। संतोष देवी अभी घरेलू तौर–तरीकों व साधनों का उपयोग करके विभिन्न तरह के आचार जैसे कैरी, आम, निंबू, गाजर, सांगरी, लहसुन, तूम्बा, प्याज, मिर्च इत्यादि के आचार बनाती है। आचार के अलावा वे विभिन्न तरह के चॉकलेट, कैन्डी, लड्डू आदि भी बनाती हैं। प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने अपनी सिलाई के कौशल को भी जारी रखा। मुख्य रूप से आचार व सिलाई का कार्य करके वे पूरी तरह सतुंष्ट है। संतोष देवी को शुरूआती दिनों में समस्याओं का सामना करना पड़ा। उन्होंने 2 किलो कैरी के आचार से अपने कार्य की शुरूआत की तथा आज वे 20–40 किलो तक आचार निर्माण करके घरेलू स्तर पर कार्य करती हैं। सन्तोष देवी को एक किलो आचार के लिए 60 से 70 रूपये तक का व्यय करना होता है, जबकि उसके आचार के रूप में मूल्य संवर्द्धन करने से 200 से 300 रूपये तक की आय प्राप्त होती है। अर्थात उन्हें प्रति किलो आचार पर 250 से 300 रूपये तक का लाभ मिलता है। संतोष देवी ने निरंतर कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर के संपर्क में रहकर अपनी एक प्रगतिशील एवं आत्मविश्वासी महिला के रूप में पहचान बनाई है। **(सम्पर्क– सन्तोष देवी (मो.9785990668), नोहर)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

प्राथमिक उपचार से पीड़ित पशु को राहत पहुंचाएं

प्रिय किसान और पशुपालक भाइयो व बहनो !

हमारे राज्य में पशुधन गांव और दूरदराज के क्षेत्र में वास करते हैं जहां पशुचिकित्सा सेवाएं तत्काल सुलभ नहीं हो पाती। पशुओं में बीमारी के कारण पशुपालकों को हानि उठानी पड़ती है और कई बार इसके कारण असामयिक मृत्यु तक हो जाती है। ऐसे में पशुपालकों को तत्काल प्राथमिक उपचार की जानकारी होना जरूरी है। पशु की सामान्य गतिविधियों में जरा सा परिवर्तन, पशु के बेचैन होने, खाना–पीना छोड़ देना या कम कर देना, दूध में कमी, पेशाब व मल में परिवर्तन, पशु की चाल, स्वभाव और आवाज में परिवर्तन व सुस्ती का होना किसी आकस्मिक स्वास्थ्य समस्या का संकेत देता है। पाचन तंत्र से संबंधित बीमारी में पशु खाना–पीना छोड़ देते हैं या बेचैनी से बहुत थोड़ा ही खाते हैं। मल पतला या कड़ा हो जाता है, पेट फूलना या गड़गड़ाहट, पेट में दर्द की स्थिति में पेट पर पैर से मारना, उठना–बैठना, पेट की ओर बार–बार देखना मुख्य लक्षण है। पशु को ठंड लग जाने की स्थिति में नाक से पानी आना, शरीर गर्म होना, सांसे लेते समय आवाज का होना सुनाई पड़ता है। इस स्थिति में पशु का नथुणा भी सूखा रहता है। प्रायः नथुनों का सूखना ज्वर होने का परिचायक है। खून में पनपने वाले परजीवियों के होने पर प्रायः पशु का शरीर गर्म रहता है। वह गोल–गोल घूमता है, सिर दीवार पर मारता है और उसका वजन धीरे–धीरे कम हो जाता है। पशु का पेशाब भी लाल या गाढ़ा पीला हो जाता है। आंखों में पानी आता है व आंखें अन्दर की ओर धंस जाती है। ऐसी स्थिति में चिकित्सक से जल्द से जल्द संपर्क करना चाहिए। आपातकालीन समस्याएं व दुर्घटनाएं पशुओं के साथ भी होती है। ऐसे हालात में उनकी सहायता आस–पास उपलब्ध साधनों, देशी दवाओं से करना व चिकित्सक के आने या चिकित्सालय तक पहुंचने तक उनकी संभाल रखना ही प्राथमिक चिकित्सा कहलाता है। सर्वप्रथम बीमार पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग कर हवादार, शांत व साफ जगह पर रखना चाहिए और शीघ्र घरेलू उपचार देना चाहिए। पशुओं की हड्डी का टूटना पीड़ा दायक स्थिति होती है। हड्डी का टूटकर बाहर निकल जाना खतरनाक स्थिति है। टूटी हड्डी को हिलाने–डुलाने से बचाने के लिए बांस की खपच्चियों से बांधना चाहिए। बांस नहीं मिलने पर अन्य सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। बाहर निकली हड्डी को साफ कपड़े से ढक देना चाहिए। रक्त स्त्राव को रोकने के लिए कटी हुई रक्त नली पर दबाव देना चाहिए। कटे हुए स्थान के 2–3 से.मी. ऊपर व नीचे कस कर बांध देना चाहिए। कई बार कटे हुए स्थान पर बांधना संभव नहीं हो तो उस स्थान पर तह करके मोटे कपड़े को फिटकरी के घोल में भिगाकर जोर से दबा कर रखना चाहिए। रक्तस्त्राव के स्थान पर बर्फ या ठंड़े पानी को लगातार डालकर खून का बहना रोका जा सकता है। अपने पशु का प्राथमिक उपचार करके पशुधन को राहत के साथ ही जीवन सुरक्षा को सुनिश्चित कर सकते हैं। **–प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414431098**

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **नवम्बर 2019** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
प्रो. जे.एस. मेहता **9414278372** निदेशक क्लिनिक्स, राजुवास, बीकानेर	गाय व भैंस में ब्याहने से पूर्व, ब्याहने के समय एवं ब्याहने के पश्चात रखी जाने वाली सावधानियां	07.11.2019
डॉ. राजकुमार बेरवाल **9414482918** सहायक प्राध्यापक, वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ़	उन्नत तकनीकी प्रबंधन पशुपालन से पशुपालकों की आय दुगुनी कैसें करें।	21.11.2019

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी
संपादक
डॉ. आर. के. धूड़िया
डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा
डॉ. ए. के. कटारिया
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। **1800 180 6224**